

श्री लक्ष्मी चालीसा

मातु लक्ष्मी करकृपा, करो हृदय में वास
मनोकामना सदिध करि पुरबहु मेरी आस
यही मोर अरदास हाथ जोड़ वनिती करूँ
सबवधि करो सुवास जय जननि जगदंबिका ।

सनिधु सुता मैं सुमरिँ तोही, ज्ञान बुधद विदिया दो मोहि
तुम समान नही कोई उपकारी सब वधि पुरबहु आस हमारी ।

जय जय जगत जननि जगदम्बा । सबकी तुम ही हो अवलम्बा ॥
तुम ही हो सब घट घट वासी । वनिती यही हमारी खासी ॥
जगजननी जय सनिधु कुमारी । दीनन की तुम हो हतिकारी ॥
वनिवौ नतिय तुमहा महारानी । कृपा करौ जग जननि भवानी ॥
केहि वधि सितुता करौ तहारी । सुधलीजै अपराध बसारी ॥
कृपा दृष्टि चितिवो मम ओरी । जगजननी वनिती सुन मोरी ॥
ज्ञान बुधजिय सुख की दाता । संकट हरो हमारी माता ॥
कषीरसनिधु जब वषिणु मथायो । चौदह रत्न सनिधु में पायो ॥
चौदह रत्न में तुम सुखरासी । सेवा कयिो प्रभु बना दासी ॥
जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा । रुप बदल तहं सेवा कीन्हा ॥
स्वयं वषिणु जब नर तनु धारा । लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा ॥
तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं । सेवा कयिो हृदय पुलकाहीं ॥
अपनाया तोहि अन्तर्यामी । वशिव वदिति त्रिभुवन की स्वामी ॥
तुम सम प्रबल शक्ति नही आनी । कहं लौ महिमा कहौ बखानी ॥
मन करम वचन करै सेवकाई । मन इच्छति वांछति फल पाई ॥
तज छिल कपट और चतुराई पूजहि विविधि भांति भिनलाई ॥
और हाल मैं कहौ बुझाई जो यह पाठ करै मन लाई ॥
ताको कोई कष्ट न होई मन इच्छति पावै फल सोई ॥
त्राहि त्राहिय दुःख नविरनि त्रिविधि ताप भव बंधन हारणी ॥
जो यह चालीसा पढ़ै पढ़ावै । ध्यान लगाकर सुनै सुनावै ॥
ताको कोई न रोग सतावै । पुत्र आदि धन सम्पत्त पावै ॥
पुत्रहीन अरु संपत्त हीना । अन्ध बधरि कोढ़ी अता दीना ॥
वपिर् बोलाय कै पाठ करावै । शंका दिलि में कभी न लावै ॥
पाठ करावै दनि चालीसा । ता पर कृपा करै गौरीसा ॥
सुख सम्पत्त बिहुत सी पावै । कमी नहीं काहू की आवै ॥
बारह मास करै जो पूजा । तेहि सम धन्य और नहि दूजा ॥
प्रतदिनि पाठ करै मन माही । उन सम कोइ जग में कहूं नाहीं ॥
बहुवधि क्य़ा मैं करौ बड़ाई । लेय परीक्षा ध्यान लगाई ॥
कर विश्वास करै व्रत नेमा । होय सदिघ उपजै उर परेमा ॥
जय जय जय लक्ष्मी भवानी । सब में व्यापति हो गुण खानी ॥
तुमहरो तेज प्रबल जग माहीं । तुम सम कोउ दयालु कहूं नाहीं ॥
मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै । संकट काटि भक्ति मोहि दीजै ॥
भूल चूक करि क्षमा हमारी । दर्शन दजै दशा नहारी ॥
बनि दर्शन व्याकुल अधिकारी । तुमहि अछत दुःख सहते भारी ॥
नहि मोहि ज्ञान बुध है तन में । सब जानत हो अपने मन में ॥
रुप चतुरभुज करै नब करहु नविरण ॥

केह प्रकार मैं करौ बड़ाई । ज्ञान बुद्धि मोहनिह अधिकाई ॥

त्राहि त्राहि दुख हारणी, हरो वेग सब त्रास । जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु को नाश ॥
रामदास धरि ध्यान नति, वनिय करत कर जोर । मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर ॥